ISSN NO.2395-0692
International Journal of
Arts, Humanities and Management Studies

पर्यटन–पर्यावरण : बुन्देलखण्ड़ भौगोलिक प्रदेश में पारिस्थितिकी अभियांत्रिकी अध्ययन, बॉदा–चित्रकूट धाम जनपद के विषेश सन्दर्भ में

रमाकान्त द्विवेदी ** & अश्वनी अवस्थी **

***सहायक प्राध्यापक भूगोल, सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी–बॉदा (उत्तर प्रदेश)**
****सहायक प्राध्यापक भूगोल, सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी–बॉदा (उत्तर प्रदेश)**

शोध सारांश

प्राकृतिक स्थलों पर जनसंख्या का बढ़ता दबाव, पर्यटन घनत्व को प्रदर्शित करता है। जिससे पारिस्थितिकी का निरन्तर ह्रास हुआ है। इसी कारण पारिस्थितिकी पर्यटन की अवधारणा तेजी से उभर कार सामने आयी है। इसके तहत पर्यटन अभियांत्रिकी संरक्षण की आवश्यकता है। 1998 में पारिस्थितिकी पर्यटन से सम्बन्धित नीति एवं दिशा निर्देश तैयार किये गये परन्तु उसका पालन पूर्णतया सम्भव न हो सका। देश के विभिन्न प्राकृतिक पर्यटन स्थलों पर प्रदूशण/कचरा इतना अधिक फैल रहा है, ऐसे पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की संख्या दिनों–दिन कम होती चली जा रही है, जबकि अध्ययन क्षेत्र में पारिस्थितिकी पर्यटन की अपार संभावनायें विद्यमान हैं।

प्रस्तावना

वर्तमान समय पर्यावरण चिंतन का है। पर्यावरण वह अदृश्य और शक्तिशाली तत्व है जो संसार के सम्पूर्ण जैव जगत को संकट में डाल दिया है। जिसमें सबसे ज्यादा चिंतन वायु प्रदूशण का है, क्योंकि मानव द्वारा प्रत्येक दिन 15000 लीटर आक्सीजन ग्रहण करता है, जिसमें कुल वायु का 20 % ही आक्सीजन होती है यदि यह प्रतिशत गिर कर 10-15% हो जाये तो क्या होगा जो एक चिंता का विषय बन जाता है, यह अनुपात पर्यावरणरविदों को चिंतन के लिए मजबूर करता है। जिस 20 % आक्सीजन से वह जीवित है। पर्यटन पर्यावरण का एक वह अंग है जो स्वयम् में एक शुद्ध पर्यावरण है, परन्तु पर्यटन जब पर्यटक बन जाता है तब पर्यटन पर्यावरण का विशुद्ध रूप ले लेता है। वही पर्यावरण चिंतन का रूप धारण कर लेता है। वर्तमान संसार में पर्यटन सबसे अधिक विकसित होने वाला धुँआं रहित उद्योग तो है, परन्तु उन समस्त धुँआं रहित उद्योगों का केन्द्र भी है, जैसे नगरीकरण का विस्तार, वन विनास, याता–यात, उत्पादा का क्रय–विक्रय आदि। इस कारण संसार में जितना चिंतन पर्यावरण के प्रति है उतना चिंतन हमें पर्यटन स्थल और पर्यटक के स्वभाव के प्रति भी करना होगा, क्योंकि पर्यटन स्थलों के पर्यावरण पर पर्यटकों का बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इन बुरे पर्यावरणीय प्रभावों का आंकलन कर इन्हें परिश्कृत करने के उपाय हमें तलाशन होंगें।

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

अध्ययन का विशय क्षेत्र

वर्तमान समय में वातावरण संरक्षण हेतू संसार के सभी राष्ट्ध्यक्ष चिंतित है पर्यावरण संरक्षण अभियांत्रिकी की खोज हेतु संसार में संधियॉ, समझौते, बैठके आदि आयोजित हो रही हैं, इसके अंतर्गत सिद्धान्त, उद्देश्य व दिशानिर्देश आदि जन–जन में पहुॅच रहे हैं। वातावरण अभियांत्रिकी जो मानव विचार, शिक्षा, जागरूकता में अभिवृद्धि के साथ तत्सम्बन्धी चेतावनी वातावरण अभियांत्रिकी को व्यक्त करता है। बुन्देलखण्ड़ पारिस्थितिकी पर्यटन से सम्बन्धित शुलभ स्थल है क्योंकी यहॉ पर्वत श्रंखालाऐं, पठारी भू–भाग और उन पर वर्षसाती झरनों के साथ छोटे–छोटे उर्मिल मैदान इस भू–भाग की प्राकृतिक सुन्दरता पर्यटकों को अपनी ओर सहजा ही आकृश्ट करते हैं। यह भू–भाग सांस्कृतिक विरासत के साथ–साथ प्राकृतिक धरोहरों की कड़ी है। परन्तु पर्यटन की कुछ प्रमुख समस्यायें हैं कि पारिस्थितिकी की दृश्टि से अति संवेदन शील होती जा रही है। इसका कारण बढ़ती पर्यटकों की संख्या है जो पर्यावरण प्रदूशण का कारण है।

पर्यटन का उद्भव व विकास संसार में सर्वप्रथम भारत में देखा गया है, जिसमें श्री राम चन्द्र का 14 वर्ष का वनवास किसी पर्यटन से कम नहीं रहा। जिसमें पर्यटन के दौरान श्री राम ने 12 वर्ष का समय चित्रकूट के पर्यटन स्थलों पर विताये। यहॉ के प्रमुख पर्यटन कामतनाथ पहाड़ी और मांदाकिनी रहीं। इसके अलावा अन्नत स्थल चित्रकूट की भाोभा बढ़ाते हैं।

स्थिति एवं विस्तार

विश्व भूपटल पर बुन्देलखण्ड़ का भौगोलिक विस्तार 24^0 00′–26^0 30′ उत्तरी अक्षांश तथा 78^0 10′–81^0 30′ पूर्वीदेशान्तर पर फैला हुआ है। जिसके अन्तर्गत झांसी, ललितपुर, उरई–जालौन, बॉदा, चित्रकूट धाम, हमीरपुर तथा महोबा जनपद सम्मलित हैं जिसमें अध्ययन क्षेत्र बॉदा–चित्रकूट धाम जनपद जिसका भौगोलिक विस्तार 24^0 11′–26^0 27′ उत्तरी अक्षांश तथा 78^0 17′–81^0 34′ पूर्वीदशान्तर जो उत्तर प्रदेश के दक्षिण उपान्त है, जबकि पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, दतियॉ मध्यप्रदेश के जनपद सम्मलित है। जहॉ पर देश की   प्रतिशत जनसंख्या तथा राज्य कि   प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। मानचित्र संख्या 1 एवं 2 जीआएस तकनीकि मानचित्र में भारत में बुन्देलखण्ड़ का भौगोलिक मानचित्र दिखाया गया है। भारत में बुन्देलखण्ड का भौगोलिक स्थिति एवं बॉदा–चित्रकूट का पर्यटन मानचित्र

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

मानचित्र संख्या 1

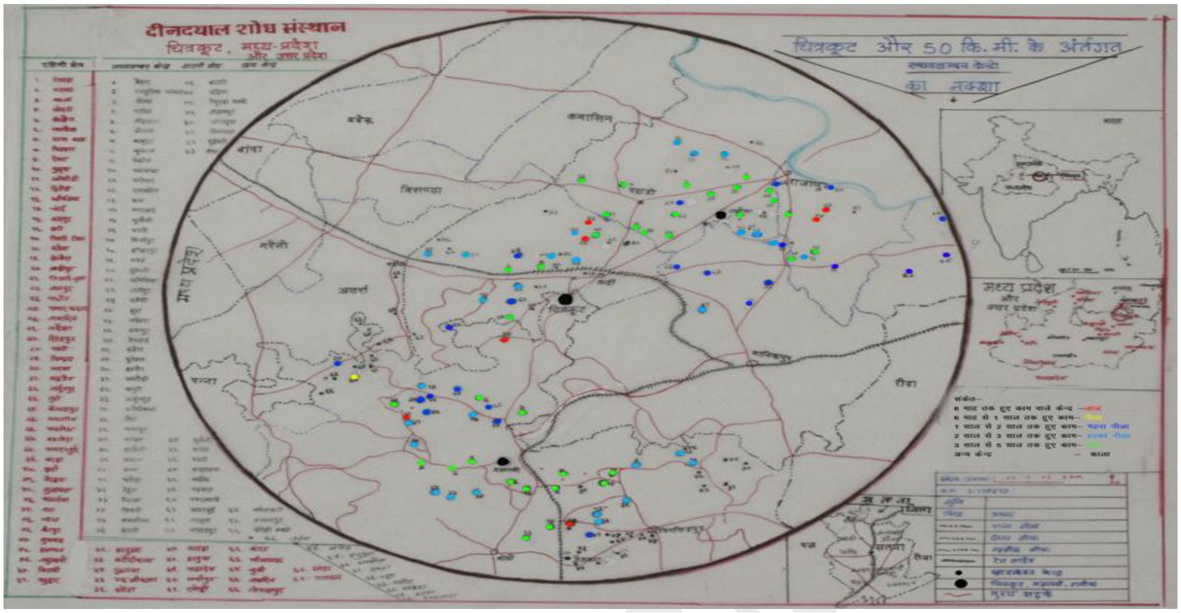

चित्रकूट धाम का जीआइएस तकनीकि से प्राप्त मानचित्र

मानचित्र संख्या 2

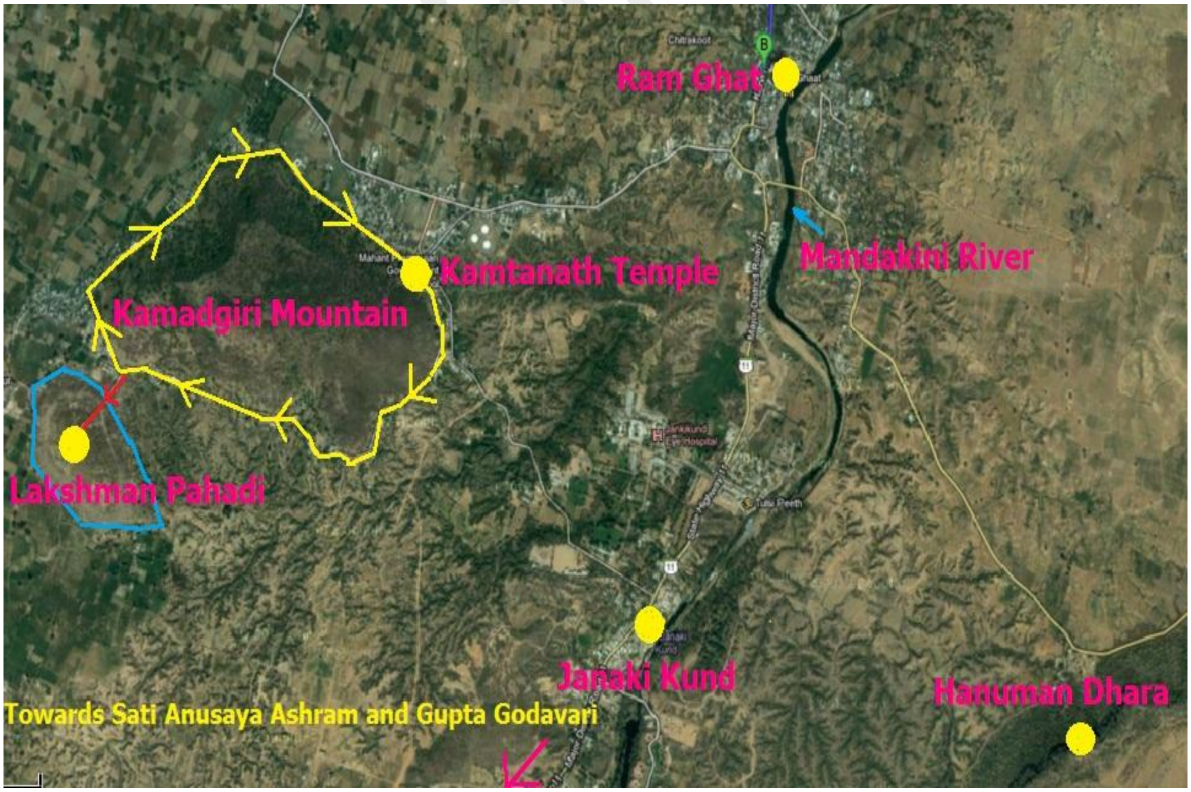

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

प्रमुख पर्यटन स्थल

अध्ययन क्षेत्र अयत्यन्त वि ााल संस्कृति का पुरोधा रहा है, यह वह क्षेत्र हो जो वीर– ााह ा के गौरव को दे ा के कोने–कोने में अपनी मि ााल जगाई है, 1857 की कांती महारानी लक्ष्मी बाई का नाम स्वर्ण अच्छरों में लिखा है, इसके बाद महरानी दुर्गावती आदि नारियॉ बुन्देल दे ा की ही हैं, साथ ही आल्हा–उदल की वीरगाधा, महराजा छत्र ााल आदि बुन्देलखण्ड़ की गौरव गाथा अध्ययन क्षेत्र को चिरस्मृति करती हैं। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र सांस्कृतिक पर्यटन का केन्द्र भी है। अध्ययन क्षेत्र में मुख्यतः दो प्रकार के पर्यटन स्थल विकसित हुये हैं जिसमें एक प्राकृतिक और दूसरा सांस्कृतिक।

प्राकृतिक पर्यटन स्थल

अध्ययन क्षेत्र प्राकृतिक समरता का केन्द्र रहा है और है, अध्ययन क्षेत्र के प्राकृतिक पर्यटन स्थलों के रूप में पन्ना और चित्रकूट धाम प्रमुख है, पन्ना का रीजर्व टाईगर और चित्रकूट का रानीपुर वन्य जीव विहार प्रमुख हैं जो पारिस्थितिकी पर्यटन का विपुल केन्द्र हैं। अध्ययन क्षेत्र का धार्मिक स्थल के रूप में चित्रकूट धाम और छतरपुर का जटाशंकर प्रमुख है। इनके अलावा ढ़ेरो जल–प्रपात और उत्तर भारत की एक मात्र कार्स्ट स्थलाकृति (चित्रकूट की गुप्त गोदावरी में चुताश्म् और निश्ःचुताश्म् स्थलाकृति) प्रमुख हैं। इसके साथ ही यहॉ के गुफाओं और गुफाओं से निकली जलधाराओं की एक विषश श्रंख्ला देखते ही बनती है। इन गुफाओं प्रगैतिहासिक काल के भित्त चित्र फतेगज की पहाड़ीयों के दश्य देखते ही बनते हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन स्थल

सांस्कृतिक पर्यटन स्थल में भी बुन्देलखण्ड़ विश्वविख्यात स्थलों का निर्माण हुआ है जिसमें छतरपुर का खजुराहो शैली तो चित्रकूट धाम की मिनी खजुराहो शैली, झॉसी दुर्ग, कालिंजर दुर्ग, महोबा दर्ग, अजयगढ़ दुर्ग, पन्ना का दुर्ग आदि के साथ **उत्तर भारत का एक मात्र नदी द्वीप रनगढ़ दुर्ग विख्यात हैं,** कालिंजर की मृगधारा जो ताजमहल की शैली को चरितार्थ करती है। रामचरित मानसकार गोस्वामी तुलसी की जन्म भूमि आदि सांस्कृतिक पर्यटन के रूप में विकसित हो रहे हैं।

पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों का आवगमन

पर्यटन शब्द के अन्तर्गत वे समस्त व्यापारिक क्रियाएं सम्मिलित हैं जो कि पर्यटकों कि अवश्यकातओं कि पूर्ति करती हैं। पर्यटक तीन प्रकार से पर्यटन पर निकलता है–

1– पर्यटन उद्देश्य हेतु यह पर्यटक द्वारा तनाव मुक्त व आराम एवं आन्नद पूर्ण समय विताने के साथ–साथ ज्ञान प्राप्ति के लिए पर्यटन पर निकलता है।

www.ijahms.com

2– देश पर्यटन उद्देश्य हेतु यह पर्यटक द्वारा मुख्यतः अपने देश के बाहर कि यात्रा करता जिससे आर्थिक लाभ, ऐतिहासिक ज्ञान विस्तार, संस्कृति का विकास आदि लाभा के लिए करता है।

3– तीर्थाटन उद्दश्य हेतु यह पर्यटक द्वारा मुख्यतः अपने धार्मिक उद्देश्यों कि पूर्ति हेतु करता है।

पर्यटन का उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु विधि–तन्त्र के विविध सोपान निम्नांकित है–

1 अध्ययन क्षेत्र की समस्या के यथार्थ आकलन एवं प्रस्तुतीकरण हेतु भौगोलिक, पर्यावरणीय जगत में प्रकाशित साहित्य का अनुशीलन किया गया है।
2 पर्यटन केन्द्रों पर बढ़ रहे पर्यावरणीय दुश्य प्रभाव का आकलन कर उन्हें परिश्कृत करने के उपायो का साकरण अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।
3 पर्यटन केन्द्रों पर जनसंख्या दबाव के ऑकड़ो का आरेखीय प्रस्तुती करण किया गया है।
4 विविध तथ्यों की पुश्टि हेतु समंकों का विश्लेशण कर परिणाम प्राप्त किये गये है।
5 आरेखों एवं सारणियों का प्रयोग कर विशय को स्पश्ट एवं बोध्यगम्य बनाया गया है।
6 अध्ययन से सम्बन्धित मानचित्र GIS तकनीकि से प्राप्त किये गये है। जिससे अध्ययन में प्रमाणिकता बनी रहेगी।
7 पथरीली जमीन की समस्या को उजागर कर उपाय ढूढना।

पर्यावरण संरक्षण अभियांत्रिकी

पर्यावरण मानव जीवन के लिए एक महत्व पूर्ण संसाधन है, भूमण्डल के उपर व नीचे उपलब्ध सभी वस्तु संसाधन ही है। परन्तु जल, वायु और उर्जा को छोड़ कर सभी पदार्थ संसाधन कहलाते हैं। पर्यावरण से ही मानव स्वशन क्रिया, (वायुमण्ड़ल) जलापूर्ति, (जलमण्ड़ल) तथा खाद्यपूर्ति (स्थलमण्ड़ल) के लिए पर्यावरण पर ही निर्भर है। इन प्राकृतिक संसाधनों का वह विभिन्न प्रकार से प्रयोग कर आज पर्यावरण संतुलन को प्रभावित किया है, जिससे इन प्राकृतिक तत्वों की गुणवत्ता में कमी आ गई है, जिससे प्रदूषण जैसी समस्या का जन्म हुआ है। इन प्राकृतिक तत्वों का संरक्षण ही प्रदूषण जैसी समस्या का निदान हो सकता है।

मानवीय ज्ञान ने विभिन्न प्रकार की संस्कृतिक को जन्म दिया है, और विकास किया है पर वह पर्यावरण सम्पन्न संस्कति का विकास नहीं कर सका। जिस प्राकर से जनसंख्या वृद्धि हो रही है उसी प्राकर से जीवन स्तर में भी वृद्धि हो रही है, जिससे याता–यात के साधनों की वृद्धि, घरेलू एंव कृषि विकास हेतु औद्योगिक इकाईयों की स्थापना के साथ–साथ नगरीकरण ने पर्यावरण प्रदूषण नाम की संस्कृति को जन्म दिया है।

चूंकि पर्यटन और पर्यावरण परस्पर निर्भर हैं, इसलिए पर्यटन केन्द्रों के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु यह आवश्यक हे कि पारिस्थितिकी तन्त्र का किसी भी दशा में अवनयन न होने पाये। पर्यटन

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

उद्योग को दीर्घकालीन समय तक जीवन्तता कायम रखने के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि इस क्षेत्र के लिए शाश्वत सिद्धान्त की स्थापना की जाय।

पर्यटकों की क्रियायें, प्रकृति के प्रति सम्मानजनक होनी चाहिए। इस उपाय से पर्यटन अपनी सम्पूर्ण क्षमता एवं निश्चित कार्यों से स्थान, समुदाय को लाभ प्रदान करेगा। इस सन्दर्भ में पर्यावरणीय अभिकताओं द्वारा वर्तमान समय में सामान्य जागरूकता आन्दोलन चालाया जा रहा है, जो नव पर्यटन यथा शाश्वत पर्यटन, शस्य पर्यटन अथवा पारिस्थितिक पर्यटन के नाम से जाना जाता है।

पर्यटन उद्योग के लिए पर्यावरण का महत्वपूर्ण योगदान है। पर्यावरणीय गुण जो पर्यटकों को सहज ही अपनी ओर आकर्शित करता है, पर्यटकों के क्रियाकलाप पर्यावरण को संवेदन शील बाना देता है।

पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यटन

प्रायः पारिस्थितिक पर्यटन पारिस्थितिकी के शाश्वत विकास की प्राप्ति का एक हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जीवन के बुनियादी तन्त्र को बिना कोई नुकसान पहूँचाये मानव को खुशहाली प्रदान करना है। आज संसार में पर्यटन तन्त्र बड़ी बड़ी तीव्र गति से बदल रहा है। आज यह बदलाव संसार में स्पश्ट दिख भी रहा है। यह बदलाव युवा पीढ़ी तथा सांस्कृतिक दृश्टि से भी पर्यावरण के प्रति सदभावना एवं संरक्षण की रूचि पैदा हुई है। कुछ परम्परायें पर्यावरण संतुलन व संरक्षण अभियांत्रिकी के उदहरण भी बन गये है जैसे चिपको आन्दोलन आदि। पर्यटक स्थलों पर पर्यटकों की लगातार संख्या बढने से नगरीकरण, होटलिंग व्यवस्था के अपने पैर फेलायें हैं। जबकि अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों ने नगरीकरण क साथ वातानुकूलित व्यवस्था को बढ़ावा दिया है। जो पर्यावरण ह्रास के कारण हैं।

भारतीय पर्यटन विकास निगम (ITDC) द्वारा पारिस्थितिक पर्यटन के क्रम में देश में वन्य प्राणीयों एवं प्राकृतिक पेड़–पौधों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है। भारत सरकार भी न केवल विदेशी पर्यटकों बल्कि घरेलू पर्यटकों के लिए भी पारिस्थितिकी पर्यटन की प्रोन्नति हेतु योजना बनायी है। चूंकि पर्यटन उद्योग का भविश्य देश के संसाधनों के निर्यात के बिना विदेशी मुद्रा को कमाना है, इसलिए पर्यटन को पर्यावरणीय मित्रता के साथ स्थापित करके चलने की आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र चित्रकूट, देश का प्रमुख पवित्र धार्मिक एवं तीर्थ स्थल के रूप में विख्यात है। यह क्षेत्र धार्मिक एवं तीर्थ स्थल के साथ शुखद पर्यावरण का तीर्थ भी रहा है और वर्तमान में शुखद पर्यावरण को नगरीयकरण, होटलिंग, याता–यात, एवं जनसंख्या के दबाव ने यहॉ के पर्यावरण को बेहद प्रभावित किया है। यहॉ की शुद्ध जल स्रोंतो को पर्यटकों ने दूषित किया हैं यहॉ की पवित्र नदी मंदाकिनी को यत्यन्त दूषित किया है जिसका जल मानव के पीने योग्य नहीं बचा हैं। मंदाकिनी अपने उददगम क्षेत्र से कुछ दूर निकल कर मानव समूह के सर्म्पक में आ जाने से प्रदूषित होने लगती है।

www.ijahms.com

इसी क्रम में चित्रकूट तीर्थ ने यहॉ के वायु मण्ड़ल को प्रभावित किया है। यहॉ प्रति–दिन सैकड़ों टूरिस्ट बसों, हजारों टूव्हीलर एवं फोरव्हीलर और परिवाहन विभाग (उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश) की एक सैकड़ से अधिक बसे यहॉ की सड़कों पर दौड़ती हैं तथा एक सैकडा से अधिक रेल परिवहन संचालित हैं जिसमें चित्रकूट धाम कर्वी, मानिकपुर, और सतना समीपस्थ रेलवे स्टेशनों से गुजरती है, जो यहॉ के वायु दूशित किया है।

अध्ययन क्षेत्र में प्रति–दिन हजारों एवं विषेश पर्वों में 15, 20 और 25 लाख से अधिक लोग पहुॅचते हैं जिससे पर्यटन स्थलों में जनसंख्या का दबाव बढ़ता है जिसने यहॉ की मृदा को प्रभावित किया हैं, पर्यटकों, नगरीकरण, कृषि में उपयोग रासायन उर्वरकों, चिकित्सालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों आदि के द्वारा छोडे गये अपशिष्ठ पदार्थों ने यहॉ कि मृदा को प्रभावित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

i. भू परिचर्चा शोध पत्र जनू 2014
ii. मध्य प्रदेश संदेश प्रकृति और पर्यावरण, जून 2013
iii. पर्यावरण एवं संधृत विकास डी.ए.बी. कालेज, कानपुर 2008
iv. द्विवेदी रमाकान्त : दि इनक्रेडबल यू.पी. 2009 पधारो हमारे देश बुन्देलखण्ड़
v. सिंह आर.एल. : जनवरी 1971 इण्डिया
vi. सिंह सवेन्द्र : पर्यावरण भूगोल
vii. चौरसिया आर.ए. : पर्यावरण भूगोल
viii. हुसैन माजिद : पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तीसरा संस्करण

www.ijahms.com